चार्ल्स डार्विन

वसन्त में श्रुस्बरी स्थित चार्ल्स का घर

झूठे किस्से गढ़ने में मुझे महारत हासिल थी...

मेरा जन्म 12 फरवरी 1809 को श्रुस्बरी में हुआ था। मेरी पहली-पहली यादें तब की हैं, जब हम अबेरगेले के पास समुद्र में नहाने गए थे। उस समय मैं चार साल से कुछ ही महीने ज़्यादा का था। मुझे वहाँ के कुछ किस्से याद हैं। कुछ जगहें याद हैं।

जुलाई 1817 में मेरी माँ नहीं रहीं। उस समय मैं आठ साल से थोड़ा बड़ा था। मुझे उनके बारे में थोड़ा-बहुत ही याद है.... उनकी मृत्युशय्या, उनका काले रंग का मखमली गाउन... और बहुत ही करीने से बनाया गया उनका मेज़। उसी साल वसंत में मुझे श्रुस्बरी में एक स्कूल भेज दिया गया। वहाँ मैं एक साल रहा। मुझसे कहा गया कि मैं सीखने में अपनी छोटी बहन कैथरीन की तुलना में बहुत सुस्त था। मेरा मानना है कि मैं कई तरह से एक शरारती बच्चा था।

इस स्कूल में जाने तक प्राकृतिक इतिहास और खासकर, चीज़ों को इकट्ठा करने में मेरी दिलचस्पी खूब बढ़ चुकी थी। मैं पौधों के नाम पता करने की कोशिश करता रहता। मैंने शंख, सील, सिक्के और खनिज न जाने क्या-क्या जुटाने शुरू कर दिए थे। संग्रह करने का शौक किसी को भी व्यवस्थित प्रकृति वैज्ञानिक या उस्ताद बनाने की ओर ले जाता है। शुरू से ही यह जज़्बा मुझमें कूट-कूटकर भरा था। मेरे भाई-बहनों की इसमें ज़रा भी दिलचस्पी न थी।

इसी साल एक छोटी-सी घटना मेरे दिमाग में गहराई से बैठ गई। मैंने अपने जैसे ही एक छोटे लड़के (मुझे लगता है कि वह लाइटन था जो बाद में प्रसिद्ध शैवाल वैज्ञानिक और वनस्पति शास्त्री बना) से कहा कि मैं रंगीन पानी देकर विभिन्न तरह के प्राइमरोज़ (एक प्रकार का पौधा जिसमें पीले रंग के फूल आते हैं) उगा सकता हूँ। यह कोरी गप्प थी और मैंने ऐसा करने की कभी कोशिश भी नहीं की थी। बचपन में यूँ ही झूठे किस्से गढ़ने में मुझे महारत हासिल थी। सिर्फ मज़े लेने के लिए। जैसे, एक बार मैंने एक पेड़ से बहुत सारे फल इकट्ठे किए और उन्हें झाड़ियों में छुपा दिया। फिर यह खबर फैलाने के लिए तेज़ी से दौड़ा कि चुराए हुए फल मैंने खोज निकाले हैं।

जब मैं पहली बार स्कूल गया तो उस समय बहुत सीधा-सादा

बच्चा रहा होउँगा। एक दिन गार्नेट नाम का एक लड़का मुझे केक की दुकान पर ले गया। उसने थोड़ी-सी केक खरीदी और बिना पैसे दिए बाहर आ गया। दुकानदार उसकी जान-पहचान का था। दुकान से बाहर आकर मैंने उससे पैसे नहीं देने की वजह पूछी। वह बोला, "क्या तुम्हें नहीं पता कि मेरे अंकल इस शर्त पर बहुत सारा पैसा छोड़ गए हैं कि जो कोई भी इस पुरानी टोपी को पहनकर उसे एक खास तरीके से घुमाएगा, उसे दुकानदार बगैर पैसे लिए कोई भी चीज़ दे देगा?" उसने मुझे दिखाया

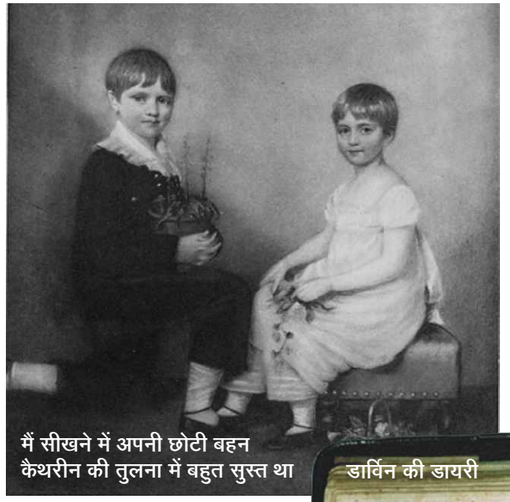

मैं सीखने में अपनी छोटी बहन कैथरीन की तुलना में बहुत सुस्त था

भी कि उस टोपी को कैसे घुमाना है। फिर वह एक और दुकान में गया और कोई चीज़ माँगी। उसने फिर से टोपी को एक खास तरीके से घुमाया और बगैर पैसे चुकाए दुकान से बाहर आ गया। यह दुकानदार भी उसकी जान-पहचान का ही था। फिर उसने मुझसे कहा, "यदि तुम उस केक की दुकान पर खुद जाना चाहो तो मैं तुम्हें अपनी यह टोपी दे सकता हूँ। तुम इसे सही तरीके से घुमाना, और तुम जो चाहोगे मिल जाएगा।" मैंने उसकी बात खुशी-खुशी मान ली और उस दुकान में जाकर केक माँगा।

फिर टोपी को उस के बताए तरीके से घुमाया। और बगैर पैसे दिए दुकान से बाहर निकलने लगा। लेकिन जब देखा कि दुकानदार मेरे पीछे आ रहा है तो मैंने वह केक वहीं फेंका और जान बचाने के लिए दौड़ लगा दी। जब मैं गार्नेट के पास पहुँचा तो यह देखकर हैरान रह गया कि वह ठहाके लगा रहा था।

मैं कह सकता हूँ कि मैं एक दयालु लड़का था, लेकिन इसका सारा श्रेय मेरी बहनों को जाता है। वे खुद भी लोगों से ऐसा व्यवहार करती थीं और मुझे भी ऐसा ही करने को कहतीं। मुझे नहीं लगता कि दयालुता वास्तव में प्राकृतिक या सहज गुण है। मुझे अण्डे इकट्ठे करने का बड़ा शौक था, लेकिन मैंने एक चिड़िया के घोंसले से एक से ज़्यादा अण्डे कभी नहीं लिए। हाँ, बस एक बार मैंने सारे अण्डे निकाल लिए थे। इसलिए नहीं कि मुझे उनकी ज़रूरत थी, बल्कि यह एक किस्म की बहादुरी दिखाने का तरीका था।

मुझे काँटे से मछली पकड़ने का बहुत शौक था और मैं घण्टों नदी या तालाब किनारे बैठकर ऊपर-नीचे होता पानी देखा करता। मेअर (जहाँ मेरे अंकल का घर था) में जब मुझे बताया गया कि मैं नमक और पानी से कीड़ों को मार सकता हूँ, उसके बाद से मैंने कभी भी ज़िन्दा कीड़े को काँटे पर नहीं लगाया। हाँ, कभी-कभी इसका खामियाज़ा भुगतना पड़ता कि मछली फँसती ही नहीं थी।

एक बार मैंने एक कुत्ते के पिल्ले को बुरी तरह पीट दिया। केवल इसलिए कि मैं अपनी ताकत के अहसास पर खुश हो सकूँ। लेकिन वह पिटाई इतनी ज़्यादा हो गई कि उस ने फिर गुर्राना ही छोड़ दिया। मुझे इसका पता ऐसे चला कि वह जगह मेरे घर के बहुत पास थी। इस घटना ने मुझ पर बहुत गहरा असर डाला। मुझे बार-बार वह जगह याद आती जहाँ मैंने उस कुत्ते की पिटाई की थी। शायद यहीं से कुत्तों को लेकर मेरा प्यार उमड़ा और फिर मुझे इसकी धुन सवार हो गई। लगता है कुत्ते भी इस बारे में जानते थे क्योंकि मैं उनके मालिकों से उनके प्यार को छीनने में उस्ताद हो गया था।

डार्विन की डायरी

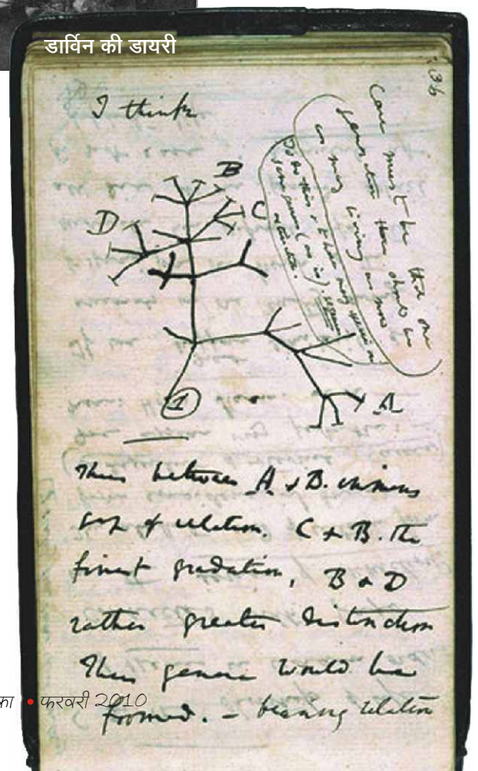

फ्राँसिस अपने पिता चार्ल्स डार्विन के बारे में कहते हैं ...

मेरे पिता को कुत्तों से बेहद प्यार था। जब वे जवान थे तब कैम्ब्रिज में उन्होंने अपनी बहन के पालतू कुत्तों को अपनी ओर खींच रखा था। उन्होंने अपने चचेरे भाई डब्ल्यू.डी. फॉक्स के कुत्ते को अपने प्रेम में ऐसा बाँधा कि वह उनके बिस्तर में चला आता। और पूरी रात पैरों के पास सोता रहता। मेरे पिता के

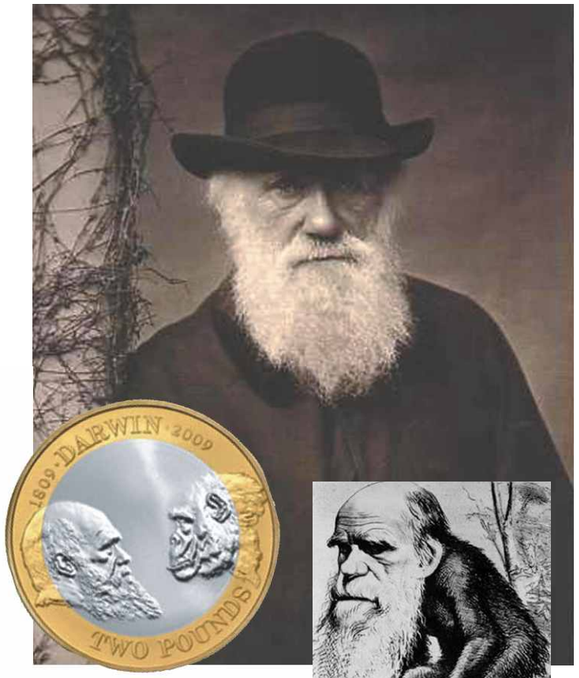

प्रति उसका बर्ताव अच्छा नहीं था। जब मेरे पिता अपनी बीगल यात्रा से वापस लौटे, तो उस ने उन्हें पहचान लिया, पर बड़े विचित्र तरीके से। मेरे पिता अकसर इसका ज़िक्र करते थे। पिताजी ने घर के पिछवाड़े जाकर उसे उसी पुराने अन्दाज़ में पुकारा। वह कुत्ता भी बिना देर किए उनके साथ चल दिया। उसी पुराने तरीके से, बिना कुछ अतिरिक्त उत्साह के साथ। मानो यह रोज़ की बात हो, न कि पाँच साल पुरानी बात।

मुझे ऐसे केवल दो कुत्ते याद हैं जो मेरे पिता से बहुत नज़दीकी से जुड़े थे। इसमें एक काले व सफेद रंग का विशालकाय कुत्ता बॉब था जिस पर हम बच्चे अपनी जान देते थे। यह वही कुत्ता है जिसकी कहानी *एक्सप्रेशन ऑफ इमोशंस* (लेखक - चार्ल्स डार्विन) में कही गई है।

लेकिन मेरे पिता से जो जानवर काफी निकटता से जुड़ा हुआ था, वह पोली थी। वह सफेद रंग की बड़ी समझदार और स्नेही कुतिया थी। जब उसका मालिक दूर यात्रा पर जाने वाला होता तो बाँधे जा रहे सामान से ही वह समझ जाती और सुस्त पड़ जाती। और उनके आने की तैयारियों को देखकर वह उत्साहित हो जाती। जब मेरे पिता उसके पास से गुज़रते तो कभी-कभी वह बड़ी बेचारगी से लेट जाती। जैसे उसे मालूम हो कि अब पिता आकर उसे प्यार से उठाएँगे और कहेंगे कि देखो कैसी भूखी पड़ी है। और अकसर ऐसा होता भी। उसकी पीठ पर जले का एक निशान था। वहाँ सफेद की बजाय लाल बाल उग आए थे। मेरे पिता उसके इस लाल रंग के बालों की सराहना खास तरीके से करते थे। पोली का पिता लाल रंग का शिकारी कुत्ता था और इस तरह जलने के बाद लाल रंग के बालों का आना उसके पिता के अदृश्य जींस की उपस्थिति वाले सिद्धान्त का परिचायक था। वे पोली का बहुत ध्यान रखते और उसकी हरकतों से कभी न खीजते थे। पिता के निधन के कुछ समय बाद ही वह मर गई या यूँ कहें कि उसे मार डालना पड़ा।

ऑटोबायोग्राफी ऑफ चार्ल्स डार्विन
प्रकाशकः रूपा एण्ड कम्पनी
मूल्यः 150 रुपए

पंखों का फैलावः
45-60 मिलीमीटर

लैमन पैंसी

(Precis lemonias lemonias)

सभी लैमन पैंसी तितलियों की पहचान हैं इनके पंखों पर बने बड़ी-बड़ी आँखों जैसे धब्बे। इसलिए शिकारी के पास आते ही ये अचानक पंख खोल लेती हैं। इससे लगता है जैसे कोई बड़ा-सा जीव वहाँ बैठा है। इससे एक पल को तो शिकारी गड़बड़ा ही जाता है। बस काफी है इतना वक्त अपनी जान बचाने के लिए।

पंखों का फैलावः
24-32 मिलीमीटर

कॉमन पिरोट

(Castalius rosimon rosimon)

अगर तुम झुककर ज़मीन के आसपास देखो तो तुम्हें छोटी-छोटी बहुत-सी तितलियाँ नज़र आएँगी। इनमें से बहुत-सी तितलियों के पंख खोलने पर नीला रंग नज़र आता है। शायद इसीलिए ये "ब्ल्यूस" कहलाती हैं। कॉमन पियरो इन्हीं में से एक है। ठण्डी सुबहों में इन्हें पत्तों या घास पर देर तक धूप सेंकते देखा जा सकता है। इनका लार्वा चमकीला हरा होता है जिन पर 2-3 काले धब्बे होते हैं। बेर इन्हें खास पसन्द हैं।

दक्षिण और मध्य भारत में इन्हें आमतौर पर देखा जा सकता है। ये अक्सर ज़मीन पर बैठी नज़र आती हैं।